NAVBHARAT TIMES, Mumbai, 1.1.2022
Page No. 1, Size:(8.49)cms X (28.39)cms.

'बुलेट ट्रेन परियोजना के लिए काम करना अलग ही अनुभव है'

नैशनल हाई स्पीड रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड के प्रबंधन निदेशक की एनबीटी से खास बातचीत

सप्ताह का साक्षात्कार

सतीश अग्निहोत्री

भविष्य में मुंबई से अहमदाबाद के बीच चलने वाली हाई स्पीड ट्रेन भारत सरकार का ड्रीम प्रोजेक्ट है। इस प्रोजेक्ट पर काम कई सालों से जारी है, लेकिन धरातल पर अब प्रगति दिखाई देने लगी है। गुजरात में जिस तेजी से काम हो रहा है, उतनी ही धीमी गति महाराष्ट्र में है। बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट से जुड़े तमाम मुद्दों पर नैशनल हाई स्पीड रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड के प्रबंधन निदेशक सतीश अग्निहोत्री से प्रमुख संवाददाता दामोदर व्यास की बातचीतः

सवालः देश की पहली हाई स्पीड रेल का काम स्लो कॉरिडोर पर चल रहा है, इसकी क्या वजह है?

जवाबः कोरोना काल के एक-दो साल छोड़ दें, तो काम तो सही गति से आगे बढ़ रहा है। इस प्रोजेक्ट के लिए भूमि अधिग्रहण भी करना था और गुजरात में 98 प्रतिशत, तो महाराष्ट्र में करीब 44 प्रतिशत भूमि अधिग्रहण हो चुका है। अब कास्टिंग यार्ड में पिलर और गर्डर इत्यादि के काम तेजी से चल रहे हैं।

सवालः आपने भूमि अधिग्रहण के आंकड़े बताए। गुजरात के मुकाबले महाराष्ट्र में बहुत कम अधिग्रहण का काम हुआ है, इसकी कोई वजह?

जवाबः ये पूरा कॉरिडोर 508 किमी का है। इसमें से ज्यादा हिस्सा करीब 352 किमी गुजरात का है, तो बड़ा हिस्सा मिल चुका है, इस बात की खुशी है। परियोजना को गुजरात सरकार का बड़ा समर्थन मिल रहा है। प्रभावित लोगों को पांच गुना मुआवजा और परिवार के किसी सदस्य को नौकरी भी मिल रही है। इसके अलावा स्किल डिवेलपमेंट में भी बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट की महत्वपूर्ण भूमिका सामने आई है। उम्मीद है महाराष्ट्र में भी जल्द ही अधिग्रहण का काम पूरा हो जाएगा।

सवालः रेलवे के अन्य प्रोजेक्ट की तुलना में बुलेट ट्रेन के लिए काम करना कितना अलग है?

जवाबः बहुत ज्यादा अलग है। देश में पहली बार कोई ट्रेन 350 किमी प्रतिघंटा की रफ्तार से दौड़ेगी, इसके लिए पूरे तकनीक अलग होगी। ट्रेनें अलग होगी, तो इंफ्रास्ट्रक्चर का मजबूती से काम करना बड़ा जरूरी है। इसके एक पिलर को बनाने में कई सावधानियां बरतनी पड़ रही हैं। जिन पिलर पर ट्रेन चलनी है, उनमें कम से कम 2500 टन (एक पिलर) भार सहन करने की क्षमता होनी चाहिए।

सवालः बताया जा रहा है इस प्रोजेक्ट के लिए एशिया की सबसे बड़ी जीओ टेक्निकल लैब बनाई गई है, वहां क्या होता है?

जवाबः जी बिलकुल, एशिया की सबसे बड़ी जीओ टेक्निकल लैब सूरत के पास बनाई गई है। यहां जिस जगह पर पिलर बनना है, वहां की मिट्टी की जांच होती है। करीब 350-400 टेस्ट एक जगह के लिए होते हैं, फिर मिट्टी के बर्ताव को परख कर उसी के अनुसार पिलर के डिजाइन बनते हैं। इसके बाद पिलर बनने का काम होता है। हर सौ मीटर के बाद मिट्टी का परीक्षण होता है। आप सोचिए वापी से बडोदा के बीच 237 किमी के सी-4 पैकिज के लिए अब तक 2,226 बोर हेड का परीक्षण हो चुका है। कुल 2453 बोर हेड का परीक्षण करना है, इसमें से लैब में 2150 सैम्पल का परीक्षण हो चुका है। एक सैम्पल के 350 परीक्षण होते हैं।

सवालः बुलेट ट्रेन दौड़ती हुई कब दिखाई देगी?

जवाबः यही सबसे महत्वपूर्ण सवाल है। हमें उम्मीद है 2026 तक बिलिमोरा से सूरत के बीच इसके ट्रायल शुरू हो जाएंगे। इस दौरान दूसरे स्थानों पर भी काम चलता रहेगा। साथ ही ऑपरेशन से जुड़े लोगों को जापानी भाषा और तकनीक की ट्रेनिंग दी जा रही है। इस प्रोजेक्ट में जापानी तकनीक का इस्तेमाल किया जा रहा है, तो भारतीय लोगों का जापानी लोगों से अच्छे से समन्वय हो सके, इसके लिए भाषा की भी ट्रेनिंग दी जा रही है।